

श्रद्धा से अर्पित किया जाए, वही वास्तविक श्राद्ध है...

जब तक माता-पिता हमारे साथ रहते हैं, तब तक उनके स्नेह की छाया हमारे सिर पर बनी रहती है। उनके रहते हुए हमें कभी यह अनुभव भी नहीं होता कि उनका संरक्षण कितना बड़ा था। जीवन की अनेक कठिनाइयां उनकी उपस्थिति मात्र से छोटी प्रतीत होती हैं। किन्तु क्या माता-पिता का सम्बन्ध केवल शरीर तक ही सीमित है? क्या मृत्यु के साथ उनका दायित्व समाप्त हो जाता है?

सनातन धर्म का उत्तर है, नहीं।

सनातन धर्म मानता है कि माता-पिता शरीर त्यागने के बाद भी अपने वंश की रक्षा के लिए तत्पर रहते हैं। वे पितृरूप में अपने वंशजों का मंगल चाहते हैं, उनके जीवन में सुख, समृद्धि और उन्नति का आशीर्वाद देते हैं। यही कारण है कि हमारे शास्त्रों में पितरों का स्थान अत्यंत उच्च माना गया है। इसी भाव को व्यक्त करने का पर्व है, श्राद्ध।

श्राद्ध शब्द श्रद्धा से बना है अर्थात् अपने पितरों के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता और स्मरण प्रकट करना ही श्राद्ध है। यह केवल एक कर्मकाण्ड नहीं, बल्कि उस ऋण को स्वीकार करने का संस्कार है जिसे हम जीवनभर कभी पूर्णतः चुका नहीं सकते। हम जो कुछ भी हैं, जो कुछ भी प्राप्त करते हैं, उसकी नींव में कहीं न कहीं हमारे पूर्वजों का परिश्रम, त्याग और आशीर्वाद निहित रहता है।

इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है कि मनुष्य जीवन में जितना महत्व देवकृपा का है, उससे कम महत्व पितृकृपा का नहीं है। अनेक ग्रंथों में तो पितृकार्य को देवकार्य से भी श्रेष्ठ कहा गया है। देवता हमें शक्ति देते हैं, परन्तु पितर हमें अस्तित्व देते हैं। देवता हमारे जीवन का संरक्षण करते हैं, पर पितर हमारे वंश की निरन्तरता के आधार हैं।

आज आधुनिकता की दौड़ में हम अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने की इस परम्परा से दूर होते जा रहे हैं। श्राद्ध पक्ष को केवल एक औपचारिक कर्म मान लिया गया है, जबकि शास्त्र इसे श्रद्धा का सबसे पवित्र अवसर बताते हैं।

ऐसी मान्यता है कि इन पंद्रह दिनों में पितृगण पितृलोक से अपने वंशजों के समीप आते हैं, जिससे वे श्रद्धापूर्वक तर्पण ग्रहण कर सकें। यदि यह अवसर श्रद्धा से निभाया जाए तो पितृकृपा प्राप्त होती है और यदि इसकी उपेक्षा की जाए तो जीवन में अनेक प्रकार की बाधाएं उत्पन्न होने लगती हैं।

पितर कौन हैं?

पितर शब्द संस्कृत के पितृ शब्द का ही रूप है। इसका अर्थ केवल हमारे पिता नहीं, बल्कि सम्पूर्ण पूर्वज हैं वे सभी जिन्होंने इस वंश को आगे बढ़ाया, जिन्होंने अपने परिश्रम, त्याग और संस्कारों से आने वाली पीढ़ियों का भविष्य निर्मित किया।

ऋग्वेद के दशम मंडल में पितरों का अत्यंत सुंदर वर्णन मिलता है। वहां पितृलोक का उल्लेख है और उसके अधिपति यम बताए गए हैं। यम को संसार का प्रथम मर्त्य पुरुष माना गया है। वे प्रथम हैं जिन्होंने इस लोक से उस लोक की यात्रा की। इसी कारण वे पितरों के अधिपति कहे गए और वही उस मार्ग के ज्ञाता हैं जिस मार्ग से एक दिन प्रत्येक जीव को जाना है।

ऋग्वेद में यजमान से कहा गया है कि **वह यम और पितरों का सम्मान करे, क्योंकि वे अपने वंशजों का कल्याण चाहते हैं। यह केवल मृत्यु का दर्शन नहीं, बल्कि पीढ़ियों की अखंड निरन्तरता का दर्शन है।**

श्राद्ध का उद्देश्य क्या है?

ऋग्वेद में पितरों का आह्वान करते समय यजमान अत्यंत विनम्र भाव से प्रार्थना करता है। वह स्वीकार करता है कि मनुष्य होने के कारण उससे भूल हो सकती है, पाप हो सकता है; किन्तु दयालु पितर उसके अपराधों को क्षमा करें, उससे अप्रसन्न न हों और उसे अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

यही श्राद्ध का वास्तविक उद्देश्य है –

श्राद्ध केवल अन्न या जल अर्पित करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि विनम्रता का संस्कार है। यह स्वीकार करना कि हम अकेले नहीं बने; हमारे जीवन के पीछे अनेक पीढ़ियों का तप, संघर्ष और त्याग है।

जब पितर प्रसन्न होते हैं, तब वे अपने वंशजों को पुष्टि, आरोग्य, धन, धान्य, संतति और सौभाग्य का आशीर्वाद देते हैं। पद्मपुराण में स्पष्ट कहा गया है कि पितृगण अत्यंत शीघ्र प्रसन्न होते हैं। वे सदैव प्रिय वचन बोलते हैं और अपने वंशजों के कल्याण की ही कामना करते हैं।

सोचिए, जो अपने वंश के सुख के लिए इतने आतुर रहते हैं, उनकी उपेक्षा करना कितनी बड़ी भूल है।

श्रद्धा ही श्राद्ध है

श्राद्ध का वास्तविक अर्थ केवल तिल, जल या पिंड अर्पित करना नहीं है। यदि केवल कर्मकाण्ड ही पर्याप्त होता, तो उसका नाम श्राद्ध नहीं रखा जाता। उसका नाम ही इस बात की घोषणा करता है कि इसका आधार श्रद्धा है।

श्रद्धा का अर्थ है – कृतज्ञ होना।

श्रद्धा का अर्थ है – अपने पूर्वजों को स्मरण रखना।

श्रद्धा का अर्थ है – उनके अधूरे सत्कर्मों को आगे बढ़ाना।

श्रद्धा का अर्थ है – ऐसा जीवन जीना, जिसे देखकर हमारे पितर भी प्रसन्न हों।

इसीलिए भारतीय संस्कृति में केवल श्राद्ध पक्ष में ही नहीं, प्रत्येक शुभ कार्य से पूर्व पितरों का स्मरण करने की परम्परा रही है। माना गया है कि जिस घर में पितरों का सम्मान होता है, वहां समृद्धि, संतोष और सौभाग्य स्वयं चलकर आते हैं। जहां पूर्वजों को भुला दिया जाता है, वहां वैभव होते हुए भी स्थिरता नहीं रहती।

अतः इस पितृपक्ष केवल तर्पण ही न करें, अपने भीतर श्रद्धा भी जगाइए। अपने माता-पिता और पूर्वजों के प्रति कृतज्ञ बनिए। उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारिए। उनके अधूरे सत्कर्मों को पूरा करने का संकल्प लीजिए।

जब वंशज श्रद्धा से पितरों का स्मरण करता है, तब पितर भी उसी श्रद्धा से उसके जीवन की रक्षा करते हैं। यही पितृकृपा है और यही जीवन में स्थायी सुख, सौभाग्य और समृद्धि का वास्तविक आधार है।

पितर सूक्ष्म रूप में हैं और उनका मोह या फिर उनके द्वारा अधूरे छोड़े गए कार्य उन्हें परिवार से बांध कर रखते हैं। इस कारण से ना तो वे नवीन देह धारण करते हैं, और ना ही ब्रह्म में विलीन हो पाते हैं। एक बात और समझना बहुत आवश्यक है कि मोह ग्रस्त पितर उत्पात ही नहीं मचाते हैं, वरन आशीर्वाद भी देते हैं। अगर आपके परिवार को निरंतर पितरों का आशीर्वाद मिल रहा है, तो और भी आवश्यक है कि आप उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करें और बार-बार करें। सिर्फ श्राद्ध पक्ष में तर्पण करके अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री नहीं करें, क्योंकि ऐसे पितरों का आशीर्वाद छत्र रूप में आपके परिवार को समग्र संकटों से बचाता है।